पाण्डुलिपि संरक्षण के उपाय

आनन्द शर्मा
पाण्डुलिपि विशेषज्ञ
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

संरक्षण का प्राथमिक लक्ष्य पुस्तक के जीवनकाल को संरक्षित करने के साथ साथ सभी परिवर्धन को ध्यान में रखते हुए उसकी अखण्डता को बनाये रखना है। पुस्तकों (पाण्डुलिपियों) और कागज के संरक्षण में बुक बाइन्डिंग, बहालि, पेपर रसायन विज्ञान और संरक्षण अभिलेख तकनीकों सहित अन्य सामग्री प्रौद्योगिकियों की तकनीकों शामिल है।

पिअर वाटर्स आधुनिक पुस्तक संरक्षण का जनक माना जाता है। उन्होंने पुस्तक और कागज की नयी तकनीकी को 1966 में विकसित किया।

पुस्तक और कागज-संरक्षण को रोकने के लिए कुछ मामलों में हेन्डलिंग, अर्न्तर्निहित उपकरणों और पर्यावरण के कारण रिवर्स क्षति तलाश करता है। पर्यवेक्षक पुस्तकों व दस्तावेजों के लिए भण्डारण के उचित तरीकों का निर्धारण करते हैं, जिनमें आगे की क्षति को रोकने और दीर्घकालीन भण्डारण को बढ़ावा देने के लिए उन्हें बक्से और ठण्डे बस्ते में डालते हैं।

सक्रिय रूप से चुने गये तरीके और तकनीको से संरक्षण दोनों ही नुकसान को रोक सकते हैं। पाण्डुलिपि या दस्तावेज तथा पुस्तक के मूल्य के आधार पर बैन्चों या स्कल आइटम उपकरणों में अधिक नुकसान को रोक सकते हैं यद्यपि पाण्डुलिपि-संरक्षण के लिए कोई नियम निर्धारित नहीं है, लेकिन नैतिकता का अलिखित सुझाव आधुनिक संरक्षण को नियन्त्रित करता है। इस दृष्टि से हम संरक्षण हेतु उपचार और परिवर्तन का चयन करना चाहते हैं, जो प्रतिवर्ती हैं और कलाकृतियों के सौन्दर्य और ऐतिहासिक अखण्डता को बनाये रखते हैं। लागू किये गये उपचारों का विस्तृत और उचित प्रलेखन पाण्डुलिपि व कागजसंरक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

खराब हेन्डलिंग पाण्डुलिपियों के बिगड़ने का प्राथमिक कारण है। हालांकि एक खराब माहौल पाण्डुलिपियों के बिगड़ने का कारण हो सकता है। कन्जरवेटरों को और एजेन्टों को ज्ञात होना चाहिए कि कतिपय ऐसे कार्य वस्तुओं को संरक्षित करने के लिए क्षति का कारण बनते हैं, जैसेः- गिरावट, उतराव, चढ़ाव वाली आर्द्रता, धूल और

प्रदूषण, आग, पानी, गैस गर्मी कीट आदि अन्य वर्मिन कागज पाण्डुलिपयाँ अन्तर्निहित उपकरणों के अधीन सामग्रियों के प्रमुख उदाहरण हैं। प्रारम्भिक पत्र पलाश, फाइबर, सण, गांजा और कपास से हस्त निर्मित थे, जो टिकाऊ होते थे तथा सदियों तक रह सकते थे। पाण्डुलिपियों में प्रयुक्त कुछ स्याही पत्रों के लिए हानिकारक होती है जैसेः- लोहे की गैल स्याही। 9वीं शताब्दी के अन्त से आमतौर पर इस्तेमाल किया जाता है, लोहे के मिश्रण के कारण इसमें एसिड होता है और नम स्थितियों में कागज को गला सकता है। कीड़े, वर्मिन, स्वाभाविक ओर से पत्र की ओर आकर्षित होते हैं, क्योंकि कागज (पत्र) सेल्यूलोज स्टार्च प्रोटीन से बना होता है, जो कीड़े वर्मिन को पोषण के स्रोत प्रदान करता है।

संरक्षण के चार चरणों में सफाई स्थितिकरण, मरम्मत, दुरुस्तीकरण आदि शामिल हैं। पुस्तकों और दस्तावेजों को विभिन्न प्रकार की सफाई के अधीन संरक्षित किया जा सकता है पाण्डुलिपि संरक्षण के पत्रों को चमड़े के नर्म ब्रश एक विशेष वैक्यूम क्लीनर्स नॉन केमिकल बल्केनाइज्ड, रबर स्पॉन्ज या विनाईरस जैसी फिनाइल से धूल साफ कर सकते हैं। कीड़ों को हटाने के लिए स्केलपैल या विशेष वैक्यूम क्लीनर का उपयोग करते हैं।

डिजिटल सूचना या संरक्षण व्यापकरूप से निरन्तरता के लिए अपेक्षित है। मीडिया के संरक्षण से ध्यान तेजी से सम्भालने के लिए प्रयास समय और धन का यह निरन्तर इनपुट तकनीकी और संगठनात्मक प्रगति माना जाता है डिजिटल जानकारी के संरक्षण के लिए मुख्य बाधा वास्तव में जबकि हम अभी भी अपनी लिखित विरासत को पढ़ने में सक्षम हैं, कई हजार साल पहले से डिजिटल जानकारी महज एक दशक पहले संभव हुई। जैविक पुस्तकालय के संरक्षण को सुगम बनाने के लिए आवश्यक सामग्री की निगरानी बनाने हेतु प्रयास की आवश्यकता है। विशेष संग्रह प्रमुख पर्यावरणीय कारक है। तापमान, आपेक्षिक आर्द्रता, सूरज की रोशनी, प्रदूषक परिवेश आदि से सुरक्षा की महती आवश्यकता है।

डिजिटल और पारम्परिक संरक्षित पाण्डुलिपियों की देखभाल के लिए रामपुर रजा में बहाली पुस्तकालय रामपुर जुबेर महमूद पेशेवर सहायक डॉ जाकिर संरक्षित पाण्डुलिपियों को लोहे की अलमारी में रखा गया, विशेषरूप से डिजायन निर्मित किये गये थे। पाण्डुलिपि की सुरक्षा के लिए मोरपंख, सांप की केंचुली, नीम के सूखे पत्ते पाण्डुलिपियों में रखते थे। लौंग का तेल कपूर नियमित सफाई बार बार हवा देना और सुखाना तथा पाण्डुलिपियों को कपड़े में लपेट कर धूल कीड़ों से बचाना और वायुमण्डलीय आर्द्रता से सुरक्षा करने हेतु बन्द लोहे की अलमारी में सुरक्षा प्रदान करना उचित है। इस प्रकार पाण्डुलिपियों को क्षतिग्रस्त होने से बचाया जा सकता है।